पौध की रोपाई : खरीफ में रोपाई अगस्त के प्रथम पक्ष एवं रवी में रोपाई 15 दिसम्बर से 15 जनवरी उत्तम माना गया है। रोपाई करते समय कतारों की दूरी 15 सेमी तथा कतार में पौधों की दूरी 10 सेमी रखते हैं । रोपाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई करना अत्यन्त आवश्यक होता है। खरीफ में प्याज की रोपाई के लिए ऊँची उठी क्यारियां बनानी चाहिए। रोपाई के पूर्व पौधों की जड़ों को 0.1 प्रतिशत कार्बेन्डाजिम एवं 0.1 प्रतिशत कार्बोसल्फान के घोल में डुबोकर लगाने से पौधे स्वस्थ रहते हैं।

खड़ी फसल में खाद देना – (टाप ड्रेसिंग) : रोपाई के चार सप्ताह बाद बची हुई यूरिया की आधी मात्रा को दो भागों में बाँट कर 30 दिन व 45 दिन बाद छिड़काव विधि से मिला देते हैं। प्याज में अच्छी पैदावार के लिए गन्धक देना चाहिए उपरोक्त खाद देते समय 30 या 40 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर गन्धक खेत में मिलाना चाहिए।

खुदाई एवं प्याज का सुखाना : खरीफ फसल को तैयार होने में बुआई से लगभग 5 माह लग जाते हैं। क्यों की गाँठे नवम्बर में तैयार होती हैं। जिस समय तापमान काफी कम होता है। पौधे पूरी तरह से सूख नहीं पाते इसलिए जैसे ही गाँठे अपने पूरे आकार की हो जाय एवं उनका रंग लाल हो जाय करीब 10 दिन खुदाई से पहले सिंचाई बन्द कर देनी चाहिए। प्याज की खुदाई करके इनको कतारों में रखकर सुखा देते हैं। पत्ती को गरदन से 2.5 सेमी ऊपर से अलग कर देते हैं और फिर एक सप्ताह तक छाएदार स्थान पर सुखा लेते हैं। सुखाते समय सड़े हुए, कटे हुए, दो फाड़े, फुलों के डन्ठल वाली एवं अन्य खराब गाँठे निकाल देते हैं।

उपज : खरीफ में 200 से 250 कुन्तल प्रति हेक्टेयर औसत उपज हो जाती है तथा रबी में 300 से 350 कुन्तल प्रति हेक्टेयर प्याज कन्दों की पैदावार हो जाती है।

शोहरतगढ़ एन्वायरन्मेंटल सोसाइटी

–: प्रधान कार्यालय :–

9 प्रेमकुंज, आदर्श कालोनी शोहरतगढ़,
सिद्धार्थनगर - 272205

–: रिजनल शाखा :–

एमएमआईजी 1/28 प्रथम तल, सेक्टर-ए
सीतापुर रोड योजना, लखनऊ- 226021

–: सहयोगी संस्था :–

जमशेद जी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई

Ptd. Shanker Offset Printers, S.Nagar, M.-9935282540

प्याज उगाने की उन्नत खेती – आर्थिक सशक्तिकरण की पहल

भारत में उगाई जाने वाली सब्जी की फसल में प्याज का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसका प्रयोग सलाद के रूप में कच्चे ही तथा भूनकर कई प्रकार से प्रयोग की जाती है इसमें औषधीय गुण पाये जाते हैं। बड़ी प्याज की अपेक्षा छोटी प्याज में अधिक पोषक तत्व पाये जाते हैं। इसकी मुख्य कीमत इसके सुगन्ध में है प्याज में तीखापन सल्फर के द्वारा होता है। जो जूस में थोड़ी मात्रा में पाया जाता है। इसे एलाइन प्रोपाइल डाइ सल्फाइड कहते हैं। प्याज एक ऐसी फसल है जिसके निर्यात से भारत को प्रतिवर्ष काफी विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

उन्नत प्रजातियां

एग्रीफाउण्ड डार्क रेड (खरीफ) :

यह प्रजाति राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान द्वारा विकसित की गयी है ।